ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 7 कुल पृष्ठ-8 8 से 14 फरवरी, 2024 दयानन्दाब्द 199 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 मा. कृ.-1

चलो हैदराबाद! चलो हैदराबाद!! चलो हैदराबाद!!!

निजाम हैदराबाद के अत्याचारों से संघर्ष करने वाले आर्यों का निमंत्रण

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य समाज नलगोंडा के सौजन्य से

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती एवं आर्य समाज नलगोंडा के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में

विशाल राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक – 1, 2 एवं 3 मार्च, 2024 ● स्थान – आर्य समाज नलगोंडा, हैदराबाद (आ.प्र.+तेलंगाना)

मुख्य अतिथि

विश्व विख्यात योग गुरु स्वामी रामदेव जी महाराज

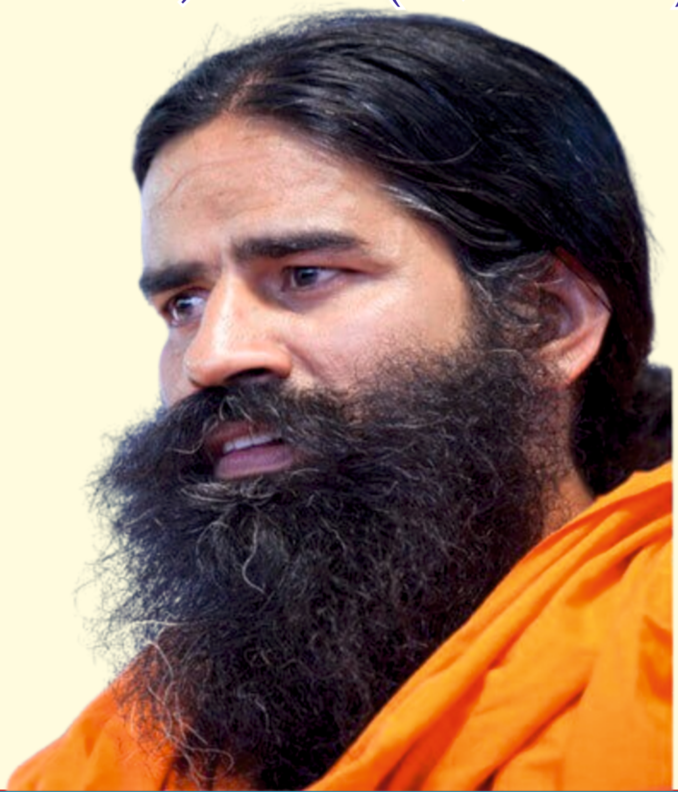

कार्यक्रम

200 कुण्डीय यजुर्वेदीय महायज्ञ का भव्य आयोजन

1 मार्च, 2024 (शुक्रवार) को
सायं 4 बजे से शुभारम्भ

राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन
2 मार्च, 2024 (शनिवार)

राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन
3 मार्च, 2024 (रविवार)

ऐतिहासिक शोभा यात्रा 2 मार्च, 2024 (शनिवार) को

इस राष्ट्रीय सम्मेलन में राष्ट्रीय स्तर के आर्य नेता, विद्वान्, प्रसिद्ध भजनोपदेशक तथा यज्ञ को सम्पन्न करवाने के लिए गुरुकुलों के आचार्य/आचार्या, ब्रह्मचारी/ब्रह्मचारिणी आदि पधार रहे हैं। इस आर्य महासम्मेलन में दक्षिण भारत की समस्त आर्य समाजों तथा आर्य परिवारों से और सामाजिक व सांस्कृतिक सुधारवादी परम्पराओं में विश्वास रखने वाले हजारों भाई–बहन पधार रहे हैं। देश के समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि उपरोक्त महासम्मेलन में भारी संख्या में प्रधारकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती को ऐतिहासिक बनायें। निजाम हैदराबाद के अन्याय एवं अत्याचारों से संघर्ष करने वाली आर्य जनता हजारों की संख्या में महर्षि को स्मरण करने के लिए एकत्रित होगी। आप भी पधारकर इस ऐतिहासिक कार्यक्रम के साक्षी बनें।

स्वामी आर्यवेश
महासम्मेलन अध्यक्ष

प्रो. विट्ठलराव आर्य
महामंत्री सार्वदेशिक सभा

पं. माया प्रकाश त्यागी
कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
सान्निध्य

निवेदक – आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना एवं आर्य समाज नलगोंडा (आ.प्र.+तेलंगाना) मो.:–9849560691

नवजीवन, नवोत्साह एवं साहसी देशभक्त वीरों के अमर बलिदानों का प्रतीक

'ऋतुराज बसन्त'

— सत्यबाला देवी

नव जीवन के प्रतीक प्रकृति नटी के अनुपम सौन्दर्य एवं मातृभूमि के गौरव, सम्मान एवं स्वतन्त्रता की रक्षा हेतु दीवाने और साहसी वीरों के अमर बलिदानों के महापर्व ऋतुराज बसन्त के शुभागमन से समस्त चराचर सृष्टि में हर्ष उल्लास, उमंग एवं उत्साह का सागर हिलोरें लेने लगता है। समस्त प्राकृतिक वातावरण में शोभा और सौन्दर्य बिखर जाता है। प्रकृति सुन्दरी नव पल्लवों का हरित परिधान धारण किए, नाना रंग बिरंगे कुसुमों के विविध आभूषणों से अलंकृत सरसों के पीत वर्ण पुष्पों की बासन्ती साड़ी से आवेष्टित, सोलह श्रृंगार किए सजी संवरी नई नवेली दुल्हन सी अपने प्रियतम बसन्त का अभिनन्दन करने हेतु उद्यत हो उठती है। यही नहीं कल–कल निनादिनी पुण्य सलिला सरिताएँ भी ऋतुराज बसन्त का अभिषेक करने हेतु उत्सुक हो उठती है। पुष्प गुच्छों पर गुज्जार करते हुए मधुपान द्वारा तृप्त मस्त भ्रमरगण, कलरव करते विविध विहंग समूह, आम्रकुंजों में पंचम स्वर अलापती उन्मत्त कोकिला आदि मानों बन्दी गणों के रूप में ऋतुराज की अभ्यर्थना करते हुए, उसका प्रशस्ति गान कर एक निराले ही रहस्यमय लोक का सृजन कर, अखिल सृष्टि को मधुरिम प्रेम का सन्देश वहन करते हुए समस्त वातावरण को प्रेममय प्रेरणादायक, स्फूर्तिमय, उत्साहवर्धक, स्निग्ध, मधुर, सरस एवं मनोहर बना देते हैं। जिस पादप समूह को आततायी पतझड़, पत्र पुष्प विहीन कर ठूंठ सदृश, जीर्ण–शीर्ण एवं जर्जर बना देता है, बसन्त का आविर्भाव उन्हें पुनः नव–किसलय दल से सुसज्जित कर, अनुपम सौन्दर्य वैभव से अलंकृत कर नवजीवन प्रदान कर देता है। भयंकर शीत से चराचर सृष्टि को उत्पीड़ित एवं त्रस्त करने वाले शिशिर की विदा और नवोल्लास के प्रतीक ऋतुराज बसन्त के अवतरण से समस्त जड़ चेतन उसी प्रकार उल्लसित एवं आनन्द मग्न हो उठते हैं, जिस प्रकार किसी अत्याचारी शासक के पराभव से समस्त प्रजाजन सुख–शान्ति और निश्चिन्तता का अनुभव कर आनन्द विभोर हो उठते हैं। बसन्त के आविर्भाव से समस्त वातावरण नव आभा, नव ज्योति, नव–छटा नव–सौन्दर्य एवं नव–आलोक से ज्योतिर्मान हो उठता है। मन्द–मन्द प्रवाहित, शीतल सुगन्धित दक्षिणी मलय समीर नव–विकासित पुष्प–दलों से अठखेलियाँ करने लगती है जिसके फलस्वरूप समस्त मानव–समाज नाच–रंग, गायन–वादन आदि नाना आमोद–प्रमोदों एवं विविध मनोरंजक क्रीड़ाओं में मग्न हो आत्म विस्मृत हो उठता है। अखिल विश्व में ऋतुराज बसन्त का अखण्ड साम्राज्य प्रतिष्ठित होने के फलस्वरूप मानव–जीवन में नहीं अपितु पशु–पक्षियों तक के हृदयों में भी नवोत्साह, नव–अभिलाषा, नवआशा, नव–चेतना, नव–जागरण एवं नव–स्फूर्ति का संचार होने लगता है। समस्त सृष्टि में विरला ही कोई हत भाग्य होगा जिसे कामन मयूर बसन्त की मनोमुग्धकारी, ज्योत्सनामय, अपूर्व, अनिबर्चनीय नयनाभिराम उज्ज्वल दैवीय बासन्तिक छटा को निरखकर नाच न उठता हो।

ऋतुराज बसन्त के आविर्भाव पर संवेदनशील रसिक कवि हृदय का तो कहना ही क्या वह तो ऋतुराज के इस अद्वितीय दिव्य सौन्दर्य पर मुग्ध हो उसकी सार्वभौमिक विजय का गुणगान करने लगता है। विश्व के अनेक कविजनों ने ऋतुराज की अनुपम शोभा और अपूर्व छटा का चित्रण कर अपनी लेखनी को चित्रकारों ने अपनी तूलिका को धन्य किया है। कविकुल चूड़ामणि महाकवि कालिदास ने 'कुमार सम्भव में बसन्त का इतना सरस, सजीव और हृदयग्राही चित्रण किया है कि रसिक पाठक गण उसे पढ़ते–पढ़ते आत्म विभोर और मन्त्र मुग्ध हो उठते हैं। कवि कुल शिरोमणि जयदेव, मैथिल कोकिल विद्यापति, महाकवि केशव प्रभृति कवि जनों के काव्य में तो बसन्त इठलाता सा दृष्टिगोचर होता है। जायसी की विरह दग्धा नायिका नागमति तो बसन्त के अलौकिक, दिव्य बासन्तिक सौन्दर्य की अनुपम छटा का अवलोकन कर अपनी विरह व्यथा ही नहीं प्रत्युत अपने प्राण स्वरूप प्रियतम को भी विस्मृत कर मस्ती में झूमने लगती है। भारतीय काव्य गगन के चन्द्र महाकवि तुलसी दास ने भी रामचरित मानस में बसन्त की बासन्तिक शोभा का चित्रांकन कर नव चेतना एवं नव–संकल्प का शुभ–संदेश दिया है। रीति–कालीन कवियों को तो पग–पग और डगर–डगर में बसन्त ही बिखरा दृष्टिगोचर होता है।

योगराज भगवान श्रीकृष्ण ने भी कुरुक्षेत्र के युद्ध प्रांगण में मोह ग्रस्त अर्जुन को अन्याय और अत्याचार का दमन करने और आततायी कौरवों के विरूद्ध लोहा लेने के लिए नव–साहस का सन्देश देते हुए उसमें दुष्ट दलन, पौरुष, वीरता और लोक कल्याण की भावना जागृत करने हेतु कहा था। ''ऋतुनाम कुसुमाकराः।'' छायावादी युग की प्रतिनिधि कवियित्री महावेदी वर्मा भी, अनुपम यौवनमयी, सौन्दर्यमयी प्रकृति प्रदत्त आभूषणों एवं आभरणों से समअलंकृत बसन्त रजनी का आह्वान करती हुई कहती है,'' धीरे–धीरे उतर क्षितिज से ऐ! बसन्त रजनी! तारकमय नववेणी बन्धन,'' इत्यादि। वस्तुतः बसन्त रजनी के चेतन, व्यापक, मनोमुग्धकारी व्यक्तित्व का दर्शन कराता है। अनन्त शक्तिशाली, नवचेतना जागृत करने वाले ऋतुराज बसन्त के विश्वव्यापी प्रभाव से तपोवन भी अछूते नहीं रहते। जिसके फलस्वरूप तपोवनों की शान्त उन्मुक्त, स्निग्ध, ज्योत्सनामयी सुरम्य प्राकृतिक बासन्तिक छटा तपोधनी महर्षियों के हृदयों में भी अनन्तता के भाव जागृत करने में समर्थ होती रही है। फलतः वे आत्म–साधन के साथ–साथ आध्यात्मिक चिन्तन में दत्तचित्त हों उस अनन्त सौन्दर्यशाली परम शक्ति समन्वित, निराकार निर्विकार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी प्रभु का साक्षात्कार करने में भी सफल होते रहे हैं।

यही नहीं ऋतुराज बसन्त मातृभूमि के लाडले साहसी वीर देशभक्त नौजवानों को भी देश की स्वाधीनता और गौरव की रक्षा हेतु देश प्रेम की बलि वेदी पर हंसते–हंसते प्राणोत्सर्ग करने की भी प्रेरणा देता रहा है। जहाँ एक ओर यह महापर्व सहृदय, रसोन्मत्र मानव–हृदयों में रणोल्लास एवं आत्मोत्सर्ग की भावना का उदय कर उन्हें आततायी, देशद्रोही एवं पावन स्वर्गतुल्य सुखद मातृभूमि को पदाक्रान्त करने की इच्छुक शत्रु की विशाल वाहिनी से जूझने की शक्ति और साहस भी प्रदान करता रहा है। इसी भावना के वशीभूत हो हमारे शूरवीर और निर्भय राजपूत सैनिक केसरिया बाना पहन, वीररस में उन्मत्त हो, प्राणों का मोह त्याग, रणघोष सुनते ही शत्रु सैन्य पर टूट पड़ते और उससे लोहा लेते हुए या तो समस्त शत्रु–शत्रु सैन्य का विध्वंस कर विजयोल्लास में मत्त हो बसन्तोत्सव मनाया करते थे अथवा स्वयं जौहर व्रत धारण कर मातृभूमि की स्वतन्त्रता और सन्मान की रक्षा हेतु एक–एक करके वीरगति को प्राप्त हो जाते थे पर कभी भी शत्रु को पीठ दिखाकर कायरों की तरह रणभूमि से पलायन नहीं करते थे। पुरजा–पुरजा कट मरे तऊ न छाड़े खेत।' दूसरी ओर वीरांगना राजपूत ललनाएँ भी अपनी आत्मरक्षा हेतु पूजा की थाली लिए अपने साहसी वीरों का अनुगमन करते हुए जौहर व्रत का अनुष्ठान करने हेतु प्रज्ज्वलित चिता में कूद पड़ती थी। अतः वीर हृदयों में इस प्रकार अदमनीय देश की स्वाधीनता की रक्षा हेतु साहस, अपूर्व वीरता, अद्भुत शौर्य, महान आत्म त्याग एवं अभूतपूर्व आत्म बलिदान की भावना का उदय करने वाला ऋतुराज बसन्त वस्तुतः सत्यार्थों में ऋतुराज कहलाने का अधिकारी है। इसी भावना को लक्ष्य कर श्रीमती सुभद्रा कुमारी, चौहान ने अपनी ओजस्विनी कविता, ''वीरों का कैसा हो बसन्त'' में भारतीय वीरों द्वारा सत्यार्थों में बसन्त मनाने का चित्रांकन किया है। जिसका साक्षी आज भी भारत का प्रहरी स्वरूप हिमाचल, पानीपत, कुरुक्षेत्र, हल्दी घाटी तथा राजस्थान के अब रण–प्रांगण एवं 1857 के प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में झांसी की रानी सम वीरांगनाओं और मंगल पाण्डे समान देशभक्तों समान देश प्रेम की बलिवेदी पर प्राण न्यौछावर करने वाले वीरों की गाथाएँ सुना रही हैं।

ऋतुराज बसन्त मातृभूमि के लाडले साहसी वीर देशभक्त नौजवानों को भी देश की स्वाधीनता और गौरव की रक्षा हेतु देश प्रेम की बलि वेदी पर हंसते–हंसते प्राणोत्सर्ग करने की भी प्रेरणा देता रहा है। जहाँ एक ओर यह महापर्व सहृदय, रसोन्मत्र मानव–हृदयों में रणोल्लास एवं आत्मोत्सर्ग की भावना का उदय कर उन्हें आततायी, देशद्रोही एवं पावन स्वर्गतुल्य सुखद मातृभूमि को पदाक्रान्त करने की इच्छुक शत्रु की विशाल वाहिनी से जूझने की शक्ति और साहस भी प्रदान करता रहा है। इसी भावना के वशीभूत हो हमारे शूरवीर और निर्भय राजपूत सैनिक केसरिया बाना पहन, वीररस में उन्मत्त हो, प्राणों का मोह त्याग, रणघोष सुनते ही शत्रु सैन्य पर टूट पड़ते और उससे लोहा लेते हुए या तो समस्त शत्रु–शत्रु सैन्य का विध्वंस कर विजयोल्लास में मत्त हो बसन्तोत्सव मनाया करते थे अथवा स्वयं जौहर व्रत धारण कर मातृभूमि की स्वतन्त्रता और सन्मान की रक्षा हेतु एक–एक करके वीरगति को प्राप्त हो जाते थे पर कभी भी शत्रु को पीठ दिखाकर कायरों की तरह रणभूमि से पलायन नहीं करते थे।

भारत माँ के वक्ष स्थल स्वरूप पंचनद (पंजाब) के वीरों साहसी सपूतों ने अपनी मातृभूमि से सदैव यही वरदान एवं शुभाषीष मांगी है, 'मेरा रंग दे बसन्ती चोला माए री मेरा रंग दे बसन्ती चोला', और ऐसा ही अलौकिक बसन्ती चोला धारण कर शहीद भगतसिंह और उनके साथी वीरों ने, पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ी मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने हेतु हंसते–हंसते फांसी के फन्दों को चूम कर गले लगा लिया था।

ऋतुराज बसन्त के उस पावन महापर्व को एक अन्य अभूतपूर्व बलिदान ने और भी चार चान्द लगा दिए हैं। इसी पवित्र पर्व के दिन धर्मवीर, दृढ़व्रती चतुदर्श वर्षीय वीर बालक हकीकत राय ने वैदिक धर्म की रक्षा हेतु तुच्छ प्राणों का मोह त्याग, अपने अमर बलिदान तत्कालीन आततायी नृशंस मलेच्छ शासक का गर्व चूर्ण किया था। कहना न होगा कि ऋतुराज बसन्त द्वारा ही उस वीर बाल हृदय में भी धर्म की बलिवेदी पर प्राणोत्सर्ग करने की प्रेरणा प्रदान की गई थी। पर यह कहना भी अत्युक्ति न होगी कि वीर बालक हकीकत के इस अमर बलिदान ने ऋतुराज बसन्त को महत्त्वपूर्ण, गौरवशाली और प्रभावशाली बना दिया था।

बसन्त के महान् पर्व के दिन वीर बालक हकीकत ने अपने जिस अद्भुत आत्म त्याग, अपूर्व निर्भयता, अदम्य साहस, दृढ़ संकल्प एवं अद्वितीय धार्मिक आस्था, विश्वास और श्रद्धा का परिचय दिया उन्हीं अमिट पद चिन्हों का अनुसरण करते हुए धर्म प्रधान भारत की भावी पीढ़ियाँ चिरन्तन काल तक देश और धर्म की बलि वेदी पर हंसते–हंसते आत्म बलिदान करने के लिए सतत् तत्पर रहेंगी। हकीकत का बलिदान किसी व्यक्ति विशेष का बलिदान नहीं वह तो स्वधर्म, स्वजाति एवं स्वदेश हित प्राणोत्सर्ग करने वाले साहसी, निर्भय शूरवीरों के आत्म बलिदान का प्रतीक है। अन्याय, अत्याचार, उत्पीड़न और शोषण के सन्मुख शीश न झुकाने वाले महान् त्यागी हृदयों का आदर्श है। वीर हकीकत पंचनद की उसी वीर प्रसू पावन भूमि पर अवतरित हुआ जिसके साहसी वीर सपूतों को मातृभूमि की स्वतन्त्रता का अपहरण कर उसे पराधीनता की अवमेघ लौह श्रृंखलाओं में आबद्ध करने वाले, उसे पदाक्रान्त एवं पददलित करने की कुत्सित इच्छा से पूर्ण विदेशी दस्युओं से सदैव लोहा लेने एवं आत्मोत्सर्ग करने का गौरव प्राप्त होता रहा है। इसीलिए यह वीर भूमि शाश्वत काल से उसी प्रकार अपने दिव्य पुत्रों के अमर बलिदान अर्पित कर बसन्त के शुभागमन का स्वागत उनके रक्त से करती रही है। ऐसे ही निर्भय, साहसी देशभक्त वीरों ने अनेक बार देश और धर्म की नैराश्य पूर्ण, साहस विहीन, दुःख दैन्य ग्रस्त, अभाव पीड़ित परिस्थितियों में पुनः बसन्त का अवतरण कर उसे सुख सौभाग्य, समृद्धि रूपी पत्र पुष्प समन्वित और बल वैभव से सम्पन्न करने का दृढ़ संकल्प पूर्ण किया है। यद्यपि इस दृढ़ व्रत के पालनार्थ उन्हें नाना यातनाएँ भी सहन करनी पड़ी, आजन्म आपद्विपदाओं की विशाल वाहिनी से जूझना पड़ा। यहीं नहीं प्रत्युत अपने प्राण तक भी विसर्जित करने पड़े पर फिर भी उन्होंने साहस नहीं छोड़ा।

बसन्त का यह पावन शुभ पर्व प्रतिवर्ष हमें उन्हीं भारत माँ के सच्चे वीर सपूतों का स्मरण कराता है। आओ! आज हम सब उन अमर शहीदों का अभिनन्दन करते हुए उन्हें अपनी भाव–भीनी श्रद्धांजलि अर्पित करें। केवल बसन्ती वस्त्र धारण कर आमोद–प्रमोद में रत हों, मनोरंजन और हास–विलास के साधनों में संलग्न होकर ही हमारा बसन्तोत्सव मनाना सार्थक नहीं हो सकता प्रत्युत ऋतुराज के आविर्भाव द्वारा नव–जागरण नवोत्साह, नव–चेतना, नव–प्रेरणा एवं नवजीवन का सन्देश ग्रहण कर हमें राष्ट्र के जीवन में सत्यार्थों में बसन्त लाने का प्रयत्न करना होगा ताकि भारतीय जन–जीवन पूर्णतया सुखी, सम्पन्न, समृद्ध, उन्नतिशील, विकासशील और प्रगतिशील बन सके।

यद्यपि हमारे देश को पराधीनता की श्रृंखलाओं से मुक्त हुए साठ से भी अधिक वर्ष हो चुके हैं पर अभी तक इस अभागे देश के जन–जीवन में बसन्त का अवतरण नहीं हो सका। आज भी इस देश की पीड़ित, शोषित, अभावग्रस्त जनता निर्धनता एवं भ्रष्टाचार के जुए के नीचे दबी कराह रही है। आज भी देश में चतुर्दिक बेकारी, मंहगाई, रिश्वतखोरी, लूट–पाट, हिंसा, प्राणहन, अन्याय, अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न एवं असन्तोष का अखण्ड साम्रज्य व्याप्त है। आज भी अलगाववादी, उग्रवादी तथा आतंकवादी प्रवृत्तियों द्वारा चारों ओर निरीह, निरपराध, निर्दोष व्यक्तियों की हत्याएँ एवं राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति को ध्वस्त किए जाते देख समस्त देशवासी आतंकित और त्रस्त हो रहे हैं। समस्त जन–जीवन अस्त–व्यस्त हो गया है। जहाँ एक ओर कतिपय प्रान्तों में असुरक्षा, अव्यवस्था एवं आतंक से हाहाकर मचा हुआ है। वहाँ दूसरी ओर अधिकार प्राप्ति पद लोलुपता, कुर्सी की खींचतान शासन हथियाने, साम्प्रदायिकता, धर्मान्धता, कट्टरता, क्रूरता और बर्बरता के ताण्डव नृत्य ने समस्त वातावरण को विषाक्त, बना दिया है। वहाँ दूसरी ओर वाह्य आक्रामक शक्तियों को इस देश की अखण्डता, एकता, संगठन, समृद्धि और सुख शान्ति को मुँह बाए निगलने के लिए तत्पर होते देखकर प्रत्येक भारतवासी का हृदय अत्यधिक आत्मग्लानि, पीड़ा और व्यथा से भर उठा है।

अतः हार्दिक दुःख से कहना पड़ता है कि समस्त विश्व को मैत्री, बन्धुत्व, प्रेम, मानवता एवं आध्यात्मिकता का अमर सन्देश वहन करने वाला, धन–धान्य–समन्वित, पूर्व का यह प्रतिनिधि देश आज स्वयं ही बल वैभवहीन, मानसिक दासता में आबद्ध घोर निराशा एवं पतन के गर्त में डूब रहा है। आन्तरिक और वाह्य संघर्षों ने इसकी जड़ों को खोखला कर दिया है। एक ओर विदेशी शत्रु अपनी गिद्ध दृष्टि जमाए इसकी स्वतन्त्रता का पुनः अपहरण करने हेतु सन्नद्ध हो रहे हैं तो दूसरी ओर नाना देशद्रोही जयचन्द देश में उपद्रव और अशान्ति मचाकर उसके अनुशासन और व्यवस्था को भंग कर, इसे पुनः विदेशी शक्तियों के हाथों में सौंप अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं।

अतः ऋतुराज बसन्त के अवतरण के शुभ अवसर पर प्रत्येक भारतवासी को यह शपथ ग्रहण करनी होगी कि वह अपना सर्वस्व न्यौछावर करके भी निराशा एवं दुर्दैव रूपी शीत से पीड़ित राष्ट्र में आझामय, सुख–सौभाग्य समन्वित जीवन रूपी शुभ बसन्त लाने के लिए सदैव कटिबद्ध रहेंगे। यही नहीं प्रातः स्मरणीय, जगत वन्द्य पूज्य बापू के अपूर्वस्वप्न को साकार करने हेतु भारत में सत्यार्थों में राम–राज्य रूपी बसन्त की प्रतिष्ठा करने में अपना सर्वस्व अर्पण करने से भी नहीं हिचकिचायेगा। तभी हम वास्तव में बसन्त मनाने के अधिकारी होंगे।

राष्ट्र जीवन तरू के इस निराशा रूपी पतझड़ को समाप्त कर इसे पुनः सुख शान्ति, समृद्धि, वैभव, शक्ति एवं आशा के नव पल्लवों और पुष्पाभरणाों से समलंकृत करने का बीड़ा उठाना होगा। इस दुर्गम कण्ट–काकीर्ण पथ का अवलम्बन करने हेतु प्रत्येक भारतवासी को पूर्ण सहयोग देने के लिए अपने निजी सुखों हितों संकीर्ण स्वार्थ वृत्तियों, पद लालसा एवं अधिकार गर्व आदि सभी का त्याग करना होगा। राष्ट्रीय जीवन में बसन्त का आविर्भाव करने हेतु पूंजीवाद का सर्वथा उन्मूलन कर, समरसता, समानता, सहिष्णुता, पारस्परिक सहानुभूति आदि की प्रतिष्ठा करनी होगी। प्रत्येक भारतवासी को कठिन परिश्रम, त्यागमय जीवन को अपनाते हुए राष्ट्र दायित्वों और नागरिक कर्त्तव्यों का समुचित और सत्यता से पालन करते हुए समाज और राष्ट्रहित के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना होगा तभी हमारा बसन्तोत्सव मनाना सार्थक और सफल हो सकेगा।

— डी–113, शिवविहार, रोहतक रोड, दिल्ली–110087

धर्म शहीद बाल हकीकतराय

– पं. नन्दलाल निर्भय

हमारा प्यारा आर्यवर्त (भारतवर्ष) ईश्वर भक्त धर्मात्माओं, वीर शहीदों की पावन भूमि है। जिन वीरों ने देश धर्म मानवता की रक्षा में अपना जीवन न्यौछावर कर दिया था। उन्हीं वीरों में से एक था धर्म शहीद हकीकतराय। हकीकतराय का बलिदान मोहम्मदशाह रंगीला के शासन काल में बसंत पंचमी के दिन 1734 ई. में हुआ था। उसकी याद में अभी भी आर्य समाज तथा अन्य धार्मिक संस्थाएँ बसंत पंचमी के दिन शहीद दिवस धूमधाम से मनाते हैं।

हकीकतराय का जन्म 1728 ई. में सियालकोट पूर्व पंजाब (पाकिस्तान) में हुआ था। उसके पिता का नाम भागमल महाजन तथा माता का नाम कौरा देवी था। बाल विवाह की प्रथा के अनुसार अज्ञानतावश हकीकतराय का विवाह सन् 1732 ई. में बटाला की लक्ष्मी देवी के साथ कर दिया गया। हकीकतराय के माता–पिता धार्मिक एवं ईश्वर भक्त थे। इसलिए हकीकतराय भी धार्मिकवृत्ति का था। हकीकतराय को सात वर्ष की आयु में सियालकोट के एक मदरसे (पाठशाला) में प्रवेश दिलाया गया। यह कुशाग्र बुद्धि का बालक था। इसलिए मौलवी साहिब (अध्यापक) इस पर बेहद प्यार करते थे। यह देखकर मुसलमान बच्चे हकीकतराय से भारी ईर्ष्या करते थे।

एक दिन मौलवी साहिब जरूरी काम से पाठशाला से बाहर चले गए तथा पाठशाला की देखभाल करना हकीतराय को सौंप गए। मौलवी साहिब के चले जाने पर मुस्लिम बच्चों ने हुड़दंग मचाना शुरू कर दिया। हकीकतराय ने जब उन्हें ऐसा करने से रोका तो उन्होंने हकीकतराय को गालियाँ दी और बुरी तरह से पीटा। मौलवी साहिब के आने पर हकीकतराय ने उसे सारा किस्सा सुना दिया। मौलवी साहिब ने हकीकतराय को पुचकारकर अपनी छाती से लगा लिया तथा मुसलमान बच्चों को दण्डित किया। मुसलमान बच्चों ने नाराज होकर हकीकतराय पर बीबी फातिमा को गालियाँ देने और मौलवी साहिब पर हकीकतराय की तरफदारी करने का आरोप लगाकर नगर के काजी सुलेमान से दोनों की शिकायत कर दी।

उन दिनों काजियों का बोलबाला था। इसलिए काजी सुलेमान ने हकीकतराय को मुसलमान बनाने का फतवा जारी किया तथा घोषणा कर दी कि अगर हकीकतराय मुसलमान न बने तो उसका सिर कटवा दिया जाए। काजी ने फतवा जारी करके नगर के हाकिम अमीरबेग को सौंप दिया। अमीरबेग एक शरीफ आदमी था। उसने काजी सुलेमान को समझाया कि यह बच्चों का झगड़ा है इसे ज्यादा बढ़ाना समझदारी नहीं है किन्तु काजी नहीं माना। कुछ मुसलमान भी काजी के समर्थक बन गए इसलिए अमीरबेग ने सारा मामला लाहौर के नवाब सकेदखान की अदालत में भेज दिया। भागमल और कौरा देवी कुछ हिन्दुओं को साथ लेकर लाहौर पहुँचे तथा नवाब से हकीकतराय को माफ कर देने की प्रार्थना की।

लाहौर के नवाब ने सारे मामले को ध्यान से पढ़ा और सुना। दोनों पक्षों की बातें सुनकर तथा हकीकत की सुन्दर सूरत कम उम्र को देखकर हकीकतराय से खुश होकर कहा –

बाल हकीकतराय! मान तूँ बात एक बेटा मेरी।
मुसलमान बन जान बचा ले, ज्यादा मत कर तू देरी।
अपनी सुन्दर बेटी के संग, निकाह करा दूँगा।
अपनी सारी दौलत का मैं, मालिक तुझे बना दूँगा।
रख मेरा विश्वास लाड़ले, बैठा मौज उड़ाएगा।
सोच–समझ ले बेटा मन में, बात अगर ना मानेगा।
पछतायेगा जीवन भर तू, यदि ज्यादा जिद ठानेगा।।

नवाब की बातें सुनकर हकीकतराय ने गम्भीरतापूर्वक नवाब से पूछा– 'नवाब साहिब, आप मुझे पहले एक बात बता दो, यदि मैं मुसलमान बन जाऊँ तो मैं कभी मरूँगा तो नहीं?इन काजी और मौलवियों से भी पूछ लो कि ये और आप भी क्या सदा जीवित रहोगे?नवाब ने सिर नीचा करके कहा – 'बेटा हकीकतराय संसार में जो जन्म लेता है वह अवश्य ही मरता है। मैं भी मरूँगा, तू भी मरेगा और काजी, मौलवी भी जरूर मरेंगे। बेटा, मैं पुत्रहीन हूँ अगर तू मेरी दुख्तर से निकाह कर लेगा तो मेरी सम्पत्ति का मालिक बन जायेगा और जीवनभर मौज उड़ाएगा। अरे हकीकतराय, अब तू ठीक तरह सोच समझ कर उत्तर दे बेटा।'

नवाब का प्रस्ताव सुनकर हकीकतराय मुस्कराते हुए बोला–

यह सृष्टि का है नियम अटल, जो इस दुनियाँ में आता है।
वह कर्मों का फल पाता है, ईश्वर न्यायकारी दाता है।।
जब आप मानते हो इसको, मृत्यु सबको खा जाती है।
वह घोर नर्क में जायेगा, जो नर पापी उत्पाती है।।
मैं राम–कृष्ण का वंशज हूँ, मैं वैदिक धर्म निभाऊँगा।
लालच के चक्कर में फंसकर, इस्लाम नहीं अपनाऊँगा।।

हकीकतराय का उत्तर सुनकर नवाब भारी नाराज हो गया और हकीकतराय पर रौब जमाते हुए बोला – तू कान खोलकर सुन लड़के, मैं अब जल्लाद बुलाऊँगा।
मैं तेग दुधारी के द्वारा, तेरे सिर को कटवाऊँगा।।
गुस्ताख बड़ा है तू लड़के, मैंने तुझको पहचान लिया।
तू नर्मी के ना लायक है, यह मेरे दिल ने मान लिया।।
तू बातूनी मत बन ज्यादा, ले बात मान सुख पायेगा।
छोटी सी उम्र में तू पगले, वृथा ही मारा जायेगा।।

हकीकत राय ने जब नवाब की बातें सुनी तो गरजते हुए बोला –
तू अन्यायी सुन कान खोल, क्यों ज्यादा बात बनाता है।
मेरी तो मौत सहेली है, तू जिसका खौफ दिखाता है।।
अमर आत्मा तन नश्वर है, वेद शास्त्र दर्शाते हैं।
धर्मवीर, बलिदानी मानव, जग में पूजे जाते हैं।।
मैं साफ बताता हूँ पापी, तू घोर नर्क में जायेगा।
इस दुनियाँ का हर नर–नारी, अत्याचारी बतलायेगा।।
मेरा यह बलिदान दुष्ट सुन, कभी न खाली जायेगा।
इस आर्यवर्त का हर मानव, वीरों की गाथा गायेगा।।
धर्मवीर, बलवानों की गाथा, नर–नारी गाते हैं।
तेरे जैसे अत्याचारी, नफरत से देखे जाते हैं।।

हकीकतराय की निर्भीकता देखकर नवाब आने से बाहर हो गया और उसने जल्लाद को बुलाकर हकीकतराय का सिर काटने का हुक्म दे दिया। हकीकतराय उस समय हंस रहा था। जल्लाद ने जब हकीकतराय की कम उम्र तथा सुन्दरता को देखा तो उसका भी पत्थर दिल पिघल गया तथा तलवार उसके हाथ से गिर गई। यह देखकर हकीकतराय ने जल्लाद को समझाते हुए कहा – "अरे भाई जल्लाद! तू अपना फर्ज पूरा कर और मुझे भी अपना धर्म निभाने दे। कहीं मेरी वजह से तेरे ऊपर भी कोई मुसीबत न आ जाए। जल्लाद ने अपने आंसुओं को पोंछकर तलवार उठाकर हकीकतराय की गर्दन पर भरपूर वार किया जिससे हकीकतराय का सिर कटकर लुढ़क गया। धन्य था धर्म शहीद बाल हकीकतराय जिसने अपना सिर कटवा कर भारत माता का सर (मस्तक) संसार में ऊँचा कर दिया जब तक सूरज, चाँद–सितारे और पृथ्वी रहेगी। यह संसार उस वीर शहीद की बलिदान गाथा गाता रहेगा।

सज्जनों कुछ लोगों का विचार है कि बाल हकीकतराय का बलिदान मुगलबादशाह शाहजहा के शासनकाल में हुआ था। तथा शाहजहाँ ने न्याय करते हुए नवाब और काजियों, मौलवियों को मृत्यु दण्ड दिया था किन्तु यह सत्य से कोसों दूर एवं निराधार है।

शाहजहाँ के पुत्र औरंगजेब की मृत्यु सन् 1707 में हुई थी तथा हकीकतराय का बलिदान सन् 1734 में हुआ था। फिर उस समय शाहजहाँ कहाँ से आ गया?वास्तव में यह सब मुसलमान शासकों एवं इतिहासकारों की हिन्दुओं को मूर्ख बनाने की एक सोची–समझी चाल है। हमें विधर्मी लोगों के षड्यन्त्र से सदैव सावधान रहना चाहिए। सच्चाई तो यह है कि उस समय मोहम्मद शाह रंगीला का कुशासन था जो शराब पीकर औरतों के साथ दिल्ली के लाल किले में नाचता रहता था। ज्ञातव्य है कि ईरान के हमलावर नादिरशाह ने उसे शराब पीये हुए जनाने कपड़ों में गिरफ्तार करके उसके हरम की हजारों स्त्रियों को अपने सैनिकों में बाँट दिया था तथा तख्ते ताउसा को लूटकर ईरान ले गया था।

आर्यो! आज भारत में छूआछूत, ऊँच–नीच, जाति–पाति का बोल–बाला है। उग्रवाद, आतंकवाद बढ़ रहा है, भारत के नेतागण भ्रष्टाचार की कीचड़ में लिप्त है। विधर्मी लोग रात–दिन भारत की गरीब जनता को ईसाई मुसलमान बनाने में लगे हुए हैं। धर्म के नाम पर पशु–पक्षियों की बलि दी जाती है। सीमा पर चीन और पाकिस्तान भारत पर आक्रमण करने को तैयार खड़े हैं। ऐसे घोर संकट में भारत को वीर शहीद बाल हकीकत राय जैसे ईश्वर भक्त, धर्मात्मा, देशभक्त युवक–युवतियों की आवश्यकता। परमात्मा से अन्त में यही प्रार्थना है –

हे भगवान! दया के सागर, भारत पर तुम कृपा कर दो।
भारत माँ की गोद दयामय, वीर सपूतों से अब भर दो।।
वेर हकीकत राय सरीखे, भारत में पैदा हो बच्चे।
धर्मवीर, ईश्वर विश्वासी, आन–बान के हो जो सच्चे।।
जिसमें ऋषियों का यह भारत, सारे जग का गुरु कहाए।
भूखा नंगा आर्यवर्त में, कोई कहीं नजर न आए।।

– ग्राम व पो.–बहीन, जनपद–फरीदाबाद, हरियाणा

वीर हकीकत राय

– पं. नन्दलाल निर्भय

धर्मवीर था वीर हकीकत, देश धर्म पर प्राण गंवाया।
भोला भाला प्यारा बालक, मृत्यु गले से शीघ्र लगाया।
तुर्कों का आतंक बढ़ा था,
जबरन मुस्लिम बना रहे,
चोटी यज्ञोपवीत देखते,
सब मिलकर के सता रहे।
आर्य धर्म जाने न पाए, सच्चा उसने प्रण अपनाया।
धर्मवीर था वीर हकीकत, देश, धर्म पर प्राण गंवाया।।
भय आतंक दिखा के हारे,
तब लालच का जाल बिछाया,
वीर अड़ा था आन पे अपनी,
सर अपना था नहीं झुकाया।
अधिकारी शिसियाए मन में, हाथों में हथियार उठाया।
धर्मवीर था वीर हकीकत, देश धर्म पर प्राण गंवाया।।
शीश चाहते हो तुम ले लो,
इसका कोई नहीं मुझे गम।
धर्म न दूँगा मरते दम तक,
सच्चा जानो निश्चय मम।
धर्म जाति पर बलि–बलि जाऊँ, इतना कहकर मृत्यु बुलाया।
धर्मवीर था वीर हकीकत, देश धर्म पर प्राण गंवाया।।

–ग्राम व पो.–बहीन, जनपद–फरीदाबाद, हरियाणा

वेद विद्यालय मलकपेट, हैदराबाद का वार्षिकोत्सव 5, 6 व 7 जनवरी, 2024 को समारेह पूर्वक हुआ सम्पन्न

देश के विभिन्न गुरुकुलों के छात्र एवं छात्राओं ने विविध प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अपनी प्रतिभा का किया प्रदर्शन

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी आर्यवेश जी एवं प्रो. विट्ठलराव आर्य का रहा सान्निध्य

डॉ. धनजंय आर्य ने किया कुशल संयोजन, युवा वैदिक विद्वान् डॉ. रविन्द्र कुमार ने यज्ञ के ब्रह्मा पद को सुशोभित किया

श्री सुधाकर गुप्ता ने की कार्यक्रम की अध्यक्षता

तेलंगाना प्रदेश की राजधानी हैदराबाद के मलकपेट में स्थित दयानन्द भवन में चल रहे वेद विद्यालय का वार्षिकोत्सव 5 से 7 जनवरी, 2024 की तिथियों में बड़े प्रभावशाली ढंग से मनाया गया। इस अवसर पर देशभर से पधारे गुरुकुलों के कन्या गुरुकुलों के छात्र एवं छात्राओं ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। छात्र एवं छात्राओं को गुरुकुल की ओर से पारितोषिक रूप में प्रमाण पत्र एवं सम्मान राशि देकर प्रोत्साहित किया गया।

इस अवसर पर गुरुकुल के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज के अतिरिक्त स्वामी आर्यवेश जी, आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना प्रान्त के प्रधान एवं सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, प्रसिद्ध विदुषी डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा, अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक प्रचारक पं. धर्मपाल शास्त्री, युवा वैदिक विद्वान् डॉ. रविन्द्र कुमार आदि के अतिरिक्त उस्मानिया विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. विद्यानन्द आर्य, डॉ. सविता आर्या, पूज्या बहन निर्मला योग भारती, श्री हरिकिशन वेदालंकार आदि स्थानीय विद्वान् भी मंच पर विराजमान रहे। सम्पूर्ण कार्यक्रम की अध्यक्षता दयानन्द भवन समिति के अध्यक्ष श्री सुधाकर गुप्ता ने की। इस तीन दिवसीय उत्सव में यज्ञ के ब्रह्मा पद को डॉ. रविन्द्र कुमार जी ने सुशोभित किया और पं. धर्मपाल शास्त्री के सारगर्भित प्रवचन हुए। कार्यक्रम का संयोजन अत्यन्त कुशलता के साथ गुरुकुल के संचालक एवं गुरुकुल पौंधा के आचार्य डॉ. धनंजय ने संभाला। उनके साथ आचार्य चन्द्रभूषण, श्री शिवदेव शास्त्री, श्री शिवकुमार शास्त्री एवं गुरुकुल के अन्य विद्वानों ने अपना पूरा सहयोग दिया। वेद विद्यालय मलकपेट के आचार्य वेदमित्र ने अपने अन्य सहयोगियों के साथ व्यवस्था को कुशलता के साथ संभाला।

इस अवसर पर दयानन्द भवन समिति के समस्त पदाधिकारी आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के समस्त पदाधिकारी एवं विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता भारी संख्या में उत्सव में उपस्थित रहे। दिल्ली से मानव सेवा प्रतिष्ठान के अधिकारी सर्वश्री चन्द्रदेव शास्त्री प्रधान, रामपाल शास्त्री कार्यकारी प्रधान, सोमदेव शास्त्री उपप्रधान आदि भी विशेष रूप से कार्यक्रम में शामिल हुए। सभी अतिथियों एवं अधिकारियों का गुरुकुल की ओर से शॉल प्रदान करके सम्मान किया गया। उपस्थित जनसमूह ने मुक्त कंठ से कार्यक्रम एवं गुरुकुल की प्रशंसा की और उत्साह के साथ आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया। कार्यक्रम के अन्त में श्री सुधाकर गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए गुरुकुल और अधिक उन्नत बनाने का संकल्प घोषित किया। कार्यक्रम उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ।

मातृ मंदिर कन्य गुरुकुल, वाराणसी की मुख्याधिष्ठात्री एवं ब्रह्मचारिणियों की महामहिम राज्यपाल से शिष्टाचार भेंट

मातृ मंदिर कन्या गुरूकुल, रामापुरा, वाराणसी की आचार्या डॉ. गायत्री आर्या अपने तीन ब्रह्मचारिणी छात्राओं कु. जागृति आर्या, सत्यप्रिया आर्या एवं लघु छात्रा प्रकृति आर्या के साथ उत्तर प्रदेश राज्य की महामहिम राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल से उनके आवास राज भवन, लखनऊ में शिष्टाचार भेंट किया। छात्राओं ने महामहिम जी को स्वस्तिवाचन, गीता के श्लोक एवं वेदमंत्र को सस्वर सुनाया एवं आचार्या डॉ. गायत्री आर्या ने विशिष्ट वैदिक, शिक्षा परम्पराओं से संचालित गुरूकुल की गतिविधियों और भावी योजनाओं के बारे में उन्हें विस्तार से अवगत कराया। महामहिम राज्यपाल ने आचार्या एवं छात्राओं को आशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ दी और आचार्या जी को अपनी सभी छात्राओं के साथ पुनः राजभवन आने का न्योता दिया।

– डॉ. गायत्री आर्या, मुख्याधिष्ठात्री, मातृ मन्दिर कन्या गुरूकुल, मो.:–9450150961, 9838359413

प्रथम चित्र में छात्राओं ने महामहिम जी को स्वस्तिवाचन, गीता के श्लोक एवं वेदमंत्र को सुनाते हुए तथा द्वितीय चित्र में आचार्या डॉ. गायत्री आर्या के साथ सामूहिक चित्र

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 46वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महावेबिनार सम्पन्न

पाखण्ड एवं अन्धविश्वास आज भी समाज के लिए चुनौती है – स्वामी आर्यवेश

वेदों का प्रकाश पूरे विश्व को देना है– डॉ. अशोक कुमार चौहान

विदेशों में भारतीय संस्कृति के प्रति अधिक जागरूकता– भुवनेश खोसला

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 46वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में त्रिदिवसीय 26, 27 व 28 जनवरी, 2024 की तिथियों में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महावेबिनार का ऑनलाइन आयोजन किया गया जिसमें 8 देशों अमेरिका, बांग्लादेश, मॉरिशस, दुबई, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका, नेपाल आदि के प्रतिनिधियों ने जुड़कर अपने–अपने विचार रखे।

कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य अखिलेश्वर जी (हरिद्वार) ने यज्ञ के साथ किया। पिंकी आर्य, नताशा कुमार (बंगलौर), कमल मोगा नैरोबी आदि के भजन हुए।

सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि वर्तमान समय में समाज में बढ़ता हुआ पाखंड एवं अंधविश्वास समाज के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। राष्ट्र की रक्षा और सभ्य समाज के निर्माण के लिए आर्यजनों को आगे आकर आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुरूप तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विचारों को जन–जन तक पहुंचाने का कार्य करना चाहिए। देश युवा पीढ़ी को समाज में फैली हुई कुरीतियों के प्रति जागरूक करना होगा, तभी देश विश्वगुरु बन सकता है। पूरे देश में कुरीतियों की भरमार बढ़ रही है। आर्य समाज के युवा संगठन आगे बढ़कर बच्चों के चरित्र निर्माण के लिए अधिक से अधिक शिविर लगायें जिससे उन्हें आर्य समाज की विचारधारा तथा वैदिक धर्म का ज्ञान प्राप्त कराया जा सके।

कार्यक्रम के अध्यक्ष शिक्षाविद डॉ. अशोक कुमार चौहान ने कहा कि आज पूरा विश्व ज्ञान का प्यासा है, हम सभी का दायित्व है कि उन्हें वेदों का ज्ञान उपलब्ध कराना चाहिए। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् युवा का चरित्र निर्माण व उन्हें संस्कार देने का कार्य कर रही हैं यह अत्यन्त सराहनीय है।

आर्य प्रतिनिधि सभा, अमेरिका के प्रधान श्री भुवनेश खोसला जी ने कहा कि विदेशों में भारतीय संस्कृति के प्रति अत्यन्त आस्था है और सभी पर्व उत्साह पूर्ण मनाए जाते हैं।

ऑस्ट्रेलिया के काउंसलर श्री सुरेन्द्र चहल जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि हमें विदेश में रहकर अपनी बोली बोलने में गर्व होता है।

बांग्लादेश से जुड़े श्री अमित आर्य जी ने कहा कि यहां यज्ञ, वैदिक प्रचार का कार्य सुचारू चल रहा है, हमें भारत से वैदिक साहित्य के सहयोग की आवश्यकता है।

नैरोबी आर्य समाज के प्रधान डा. राज कुमार सैनी जी ने कहा कि वैदिक प्रचार के लिए भारत से अच्छे विद्वान भेजे जाएं।

इस अवसर पर आर्य महिला सम्मेलन, आर्य युवा शक्ति सम्मेलन, आर्य प्रवासी सम्मेलन, दयानन्द जयंती व भावी कार्यक्रम आदि सम्मेलन आयोजित किए गए।

वेबिनार में प्रमुख रूप से सर्वश्री वैदिक विद्वान डॉ. जयेन्द्र आचार्य, आचार्य विष्णु मित्र वेदार्थी, आर्य रविदेव गुप्ता, प्रेम हंस ऑस्ट्रेलिया, हरिओम शास्त्री, विमलेश बंसल, दीप्ति सपरा, यशोवीर आर्य, कमाण्डर धर्मवीर, दुर्गेश आर्य, आर्यवती मॉरिशस, विमल चड्ढा नैरोबी, राजेन्द्र बेदी अमेरिका, ओम सपरा, कृष्ण कुमार यादव, डॉ. रचना चावला, प्रो. करुणा चांदना, श्रुति सेतिया आदि ने अपने विचार रखे।

वेबिनार में सर्वश्री आर्य नेता श्री राजेश मेहदीरत्ता, अमरनाथ बत्रा, सुरेश आर्य, आनन्द सिंह आर्य, स्वतंत्र कुकरेजा, आनन्द प्रकाश आर्य, वेद प्रकाश आर्य, कुसुम भण्डारी, विमला आहूजा, कपिल बब्बर, योगेन्द्र शास्त्री, रोहित सिंह आदि उपस्थित थे।

इस वेबिनॉर का कुशल संचालन परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य ने संभाला तथा श्री महेन्द्र भाई एवं श्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया। यह तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महावेबिनॉर सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

वीतराग संन्यासी स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती जी की जन्म जयन्ती एवं पतंजलि योग पीठ के 29वें स्थापना दिवस के अवसर पर ज्वालापुर महाविद्यालय के प्रांगण में

स्वामी दर्शनानन्द गुरुकुल महाविद्यालय के नये भवन का शिलान्यास समारोह हुआ सम्पन्न

विश्व विख्यात योगगुरु स्वामी रामदेव जी महाराज के सान्निध्य एवं देश के रक्षामंत्री श्री राजनाथ सिंह के कर–कमलों से हुआ शिलान्यास

आर्य जगत के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी यतीश्वरानन्द जी पूर्व मंत्री, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, श्री सुरेशचन्द्र आर्य आदि के अतिरिक्त मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मोहन यादव, उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री श्री पुस्कर सिंह धामी, केन्द्री कानून मंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह, आचार्य बालकृष्ण जी महाराज आदि की रही गरिमामयी उपस्थिति

आर्य समाज के भजनोपदेशकों एवं संन्यासियों का किया गया सार्वजनिक अभिनन्दन

पतंजलि योगपीठ के 29वें स्थापना दिवस के अवसर पर 6 जनवरी, 2024 को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के प्रांगण में विश्व विख्यात योगगुरु स्वामी रामदेव जी महाराज एवं आचार्य बालकृष्ण जी महाराज के पावन सान्निध्य में स्वामी दर्शनानन्द महाविद्यालय गुरुकुल की नई शाखा आचार्यकुलम् के भवन का शिलान्यास समारोह विशाल स्तर पर आयोजित हुआ जिसमें अनेक गणमान्य राजनेता, संन्यासी, विद्वान् एवं विदुषियों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। नये भवन का शिलान्यास देश के रक्षामंत्री श्री राजनाथ सिंह के कर–कमलों से सम्पन्न हुआ। शिलान्यास के अवसर पर सर्वश्री मोहन यादव मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश, श्री पुस्कर सिंह धामी मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड, केन्द्रीय कानून एवं संस्कृति मंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह, शिक्षामंत्री श्री धनसिंह रावत, डॉ. रमेश पोखरियाल सांसद, आचार्य बालकृष्ण जी महाराज, डॉ. यशदेव शास्त्री आदि भी उपस्थित रहे। पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज ने शिलान्यास की प्रक्रिया सम्पन्न कराई। तत्पश्चात् मंच से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। हजारों लोगों की उपस्थिति एवं कार्यक्रम की भव्यता अत्यन्त मनमोहक एवं प्रभावशाली थी। मंच पर राजनेताओं के अतिरिक्त आर्य समाज के वरिष्ठ संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, पूर्व मंत्री स्वामी यतीश्वरानन्द जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी आदि के अतिरिक्त श्री सुरेशचन्द्र आर्य, कन्या गुरुकुल चोटीपुरा की आचार्या डॉ. सुमेधा, कन्या गुरुकुल रूड़की की आचार्या पद्मश्री डॉ. सुकामा विराजमान थे।

समस्त अतिथियों, संन्यासियों एवं नेताओं को शॉल, श्रीफल एवं चांदी का पात्र भेंटकर आचार्य बालकृष्ण जी एवं स्वामी रामदेव जी महाराज ने अभिनन्दन किया। स्वामी यतीश्वरानन्द जी महाराज ने सभी प्रमुख नेताओं को वैदिक साहित्य भेंटकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर आर्य समाज के भजनोपदेशकों, संन्यासियों एवं गुरुकुलों के आचार्यों को भी प्रशस्ति पत्र, शॉल एवं सम्मान राशि स्वामी रामदेव जी महाराज, आचार्य बालकृष्ण एवं डॉ. यशदेव शास्त्री जी ने भेंट स्वरूप प्रदान किये।

विदित हो कि गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर आर्य समाज का एक ऐतिहासिक गुरुकुल है जिसमें अनेक विख्यात विद्वान् पढ़–लिखकर देश की सेवा में समर्पित हुए हैं जिनमें पं. नरदेव तीर्थ, पं. प्रकाशवीर शास्त्री आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इसी गुरुकुल के दीक्षान्त समारोह में डॉ.

राजेन्द्र प्रसाद लेकर पं. जवाहर लाल नेहरू सहित देश के बड़े–बड़े राजनेता एवं महान हस्तियां आते रहे हैं। इस गुरुकुल का स्वामित्व स्वामी रामदेव जी महाराज के पास है और उन्होंने लगभग 500 करोड़ रुपये की एक महत्त्वाकांक्षी योजना के साथ इस गुरुकुल के नये भवन का शिलान्यास करके गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पूरे विश्व में प्रचारित–प्रसारित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ किया है। स्वामी रामदेव जी ने अपने उद्‌बोधन में बताया कि भविष्य में यह गुरुकुल पूरे विश्व का एक महान् शिक्षा केन्द्र बनेगा, जहां से हजारों बच्चे गुरुकुलीय शिक्षा ग्रहण करके निकलेंगे।

समारोह में गुरुकुल झज्जर के आचार्य विजयपाल, स्वामी विजयवेश, स्वामी ब्रह्मानन्द, स्वामी सूर्यवेश, स्वामी आदित्यवेश, बहन प्रवेश आर्या एवं बहन पूनम आर्या, श्री विनय आर्य, एमिटी ग्रुप के निदेशक श्री आनन्द चौहान, बाबा बालकनाथ जी महाराज, लक्ष्मण गुरु जी, अखाड़ा परिषद अध्यक्ष स्वामी रविन्द्रपुरी जी महाराज, महामण्डलेश्वर स्वामी हरिचेतनानंद जी महाराज, श्री शोभित गर्ग, श्री मदन कौशिक, श्री प्रणव सिंह 'चैम्पियन', श्री राकेश टिकैत, आचार्य स्वदेश सहित आर्य समाज के लगभग सभी विद्वान, भजनोपदेशक और संन्यासी महापुरुष, हरिद्वार के सभी पूज्य आचार्य महामण्डलेश्वर व संत महात्मा, गुरुकुल ज्वालापुर की महासभा व प्रबंधकारिणी सभा के समस्त अधिकारी व सदस्यगण तथा पतंजलि से सम्बद्ध सभी ईकाइयों के इकाई प्रमुख, अधिकारी, कर्मचारी तथा संन्यासी भाई–बहन उपस्थित रहे।

इस विशाल आयोजन में स्वामी यतीश्वरानन्द जी सरस्वती, डॉ. यशदेव शास्त्री एवं आचार्य बालकृष्ण जी के संयोजन में सम्पूर्ण व्यवस्था अत्यन्त सुचारू रूप से की गई। अनेक गुरुकुलों के आचार्य एवं ब्रह्मचारी तथा ब्रह्मचारिणियाँ समारोह में सम्मिलित हुए। पतंजलि विश्वविद्यालय एवं आचार्यकुलम् के छात्र–छात्राएं भी बड़ी संख्या में कार्यक्रम में सम्मिलित थे। प्रातःकाल 21 कुण्डीय यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया जिसका संयोजन स्वयं स्वामी रामदेव जी महाराज ने किया और हजारों लोगों ने यज्ञ में आहुतियां प्रदान की। कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली रहा और भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर

हरियाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन

दिनांक 18 फरवरी, 2024 (रविवार) को

महर्षि दयानन्द पार्क, अर्बन स्टेट, जीन्द में होने जा रहा है।

आप अधिक से अधिक संख्या में पधारकर महासम्मेलन को सफल बनायें।

निवेदक

स्वामी रामवेश
संयोजक

स्वामी आर्यवेश
अध्यक्ष

महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा केन्द्र, 3705 अर्बन स्टेट, जीन्द (हरियाणा)

17 फरवरी जयन्ती पर विशेष

आर्य मुसाफिर पं. लेखराम

आर्यों के लिए पण्डित लेखराम जी का सबसे घनिष्ठ परिचय यह है कि वह एक समय 'आर्य गजट' के सम्पादक रहे थे। यों उनका नाम आर्य समाज के मूर्धन्य कर्मवीरों में और अमर हुतात्माओं में है। उन्होंने यह जानते हुए विधर्मियों का खण्डन किया कि इसके फलस्वरूप उन्हें अपने प्राण भी देने पड़ सकते हैं। परन्तु इस कारण वह कभी भी झिझके नहीं।

उनका जन्म सन् 1858 में अविभक्त पंजाब के झेलम जिले के सैयदपुर गांव में हुआ था। उनके पिता मेहता श्री तारासिंह सामान्य स्थिति के ब्राह्मण थे।

आर्यत्व की बड़ी प्रगति

यह सोच कर आज आश्चर्य और आनन्द होता है कि आर्यसमाज के प्रयत्नों के फलस्वरूप भाषा के मामले में देश कितनी लम्बी मंजिल तय कर आया है। उस समय हिन्दी, संस्कृत का कहीं नाम ही नहीं था। सब विद्यालयों में पढ़ाई उर्दू और फारसी में होती थी। लेखराम जी ने भी इन्हीं में शिक्षा पाई। वह अत्यन्त मेधावी थे, परन्तु शिक्षा बहुत दूर तक चली नहीं। आर्थिक परिस्थितियों के कारण पढ़ाई बीच में छोड़कर ही वह सत्रह वर्ष की आयु में एक सिपाही के रूप में पुलिस में भर्ती हो गए।

पंडित लेखराम जी जिस भी काम में जुट जाते थे, उसे पूरी तन्मयता से करते थे। इस कारण उनके अफसर उनसे प्रसन्न थे। पदोन्नति करके उन्हें सार्जेंट बना दिया गया।

अध्यात्म में रूचि

परन्तु लेखराम जी का मन आध्यात्मिक विषयों में अधिक लगता था। वह विचारक थे। मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी के क्रांतिकारी विचारों का भी उन पर प्रभाव पड़ा। सन् 1880 में वह पेशावर में थे। वहीं उनका आर्य समाज से सम्पर्क हुआ। वह स्वामी दयानन्द जी के विचारों से इतने प्रभावित हुए कि पुलिस की नौकरी छोड़कर आर्य समाज के प्रचार को ही उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया।

अहमदिया मत का खण्डन

उन दिनों मुसलमानों का एक नया सम्प्रदाय चला था अहमदिया सम्प्रदाय। उसका मुख्य केन्द्र कादियान में था, इसलिए इन्हें कादियानी भी कहा जाता था। इनका गुरु स्वयं को पैगम्बर कहता था। पं. लेखराम जी ने अहमदिया सम्प्रदाय की पोल खोलते हुए, तकजीब बुराहीन अहमदिया' नुस्खा खब्त अहमदिया' आदि कई पुस्तकें लिखीं। इन पुस्तकों को मुसलमानों ने भी पसन्द किया और अहमदिया लोगों का बहिष्कार कर दिया। इससे अहमदिया लोग पंडित लेखराम जी के शत्रु हो गए।

कुछ समय बाद पंडित जी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पूर्णकालिक उपदेशक बन गये। उस कार्य में पुलिस की नौकरी जितना वैभव नहीं था, परन्तु मानसिक सन्तोष था कि वह धर्म का प्रचार कर रहे हैं।

पंडित लेखराम जन्म से ही नहीं, कर्म से भी ब्राह्मण थे। उनमें चिन्तन, भाषण और लेखन की क्षमता थी। इतिहास, ईसाइयत और इस्लाम का उन्होंने गहन अध्ययन किया था और इनमें उन्हें प्रामाणिक विद्वान् माना जाता था। सन् 1893 में उनका विवाह कुमारी लक्ष्मी के साथ हुआ। उनका एक पुत्र भी हुआ, पर उसकी छोटी आयु में ही मृत्यु हो गई।

सन् 1890 में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने उन्हें ऋषि दयानन्द का विशद जीवन चरित्र लिखने का काम सौंपा। इस कार्य के सिलसिले में जानकारी एकत्र करने के लिए उन्हें देश के विभिन्न भागों की लम्बी यात्राएं करनी पड़ीं। इसलिए उनका उपनाम 'आर्य मुसाफिर' पड़ गया।

महात्मा मुंशीरामजी द्वारा सराहना

महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र की भूमिका में महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने लिखा है कि इसमें सन्देह नहीं कि पंडित लेखराम जैसा अन्वेषक स्वभाव का कार्य ही इस आर्य के लिए उपयुक्त था, परन्तु मेरे विचार से यह पुस्तक पाठकों के हाथ में और शीघ्र पहुंचती और घटनाओं की दृष्टि से और पूर्ण होती, यदि इन घटनाओं को एकत्रित करने का कार्य किसी ऐसे अन्वेषक को दिया गया होता, जिस पर उपदेश देने का दायित्व न होता। कौन नहीं जानता कि पंडित लेखराम को वैदिक (आर्य) धर्म की उन्नति का विचार कभी भी एक स्थान पर बैठने नहीं देता था और यदि उन्होंने कहीं सुन लिया कि अमुक स्थान पर मोहम्मदी अथवा ईसाई मतों के उपदेशक विशेष सफलता प्राप्त कर रहे हैं, तो फिर बड़े से बड़े काम और आवश्यक कार्य को छोड़कर भी उस स्थान पर पहुंचना वह अपना कर्तव्य समझा करते थे।

पं. लेखराम आर्य मुसाफिर
१८५८-१८९७

बलिदान

हृष्ट पुष्ट शरीर व पुलिस की नौकरी के अभ्यास के फलस्वरूप पंडित लेखराम जी को थकान और भूख प्यास का कष्ट, कष्ट ही नहीं लगता था। कई वर्ष के प्रयत्न के बाद उन्होंने ऋषि के जीवन चरित्र सम्बन्धी सामग्री एकत्र कर ली। वह उन्होंने उर्दू में लिखी थी। सन् 1897 में जब वह अपने घर में बैठे उसे पुस्तक रूप में लिख रहे थे, तभी एक काले, गठीले हत्यारे ने आकर उन पर छुरे के वार करने शुरू कर दिए। छाती और पेट पर गहरे घाव हुए। अपना काम पूरा करके हत्यारा भाग निकला। उसे पहचाना नहीं जा सका और न कभी पकड़ा ही जा सका। उनके रक्त की बूंदें महर्षि के जीवन की लिखी जा रही पांडुलिपियों पर पड़ी थीं, इसलिए उन्हें 'रक्त साक्षी' नाम दिया गया।

घायल पण्डित जी को तत्काल अस्पताल ले जाया गया। घाव गहरे थे। उन्हें बचाया नहीं जा सका। 6 मार्च 1897 की रात में उनका प्राणान्त हो गया। उस समय महात्मा मुंशीराम जी उनकी मृत्यु शय्या के पास थे। उस दिन उन्हें पता नहीं था कि बीस एक बरस बाद उन्हें भी इसी प्रकार धर्म की वेदी पर अपना बलिदान देना होगा।

आर्य जनों के लिए पण्डित लेखराम का सन्देश था कि 'आर्य समाज का लेखन (तहरीर) और भाषण (तकरीर) का कार्य बन्द नहीं होना चाहिए।

महात्मा हंसराज जी की श्रद्धांजति

पं. लेखराम जी के विषय में महात्मा हंसराज जी ने लिखा हैः मैंने धर्मवीर पं. लेखराम जी के दर्शन उस समय किए, जबकि उन्होंने वैदिक धर्म के प्रचार को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया ही था। उनकी आकृति बड़ी थी, परन्तु उनके हृदय में धर्मप्रेम की अग्नि बड़ी प्रचंडता से प्रज्ज्वलित थी। कोई समय नहीं, जब उन्हें आर्यसमाज का ध्यान न हो। कोई भी कष्ट ऐसा नहीं था, जिसे वह आर्य समाज के लिए सहन करने को उद्यत न हों। यदि पांच सौ मील से भी तार आया है कि कोई हिन्दू अपने धर्म का त्याग करने लगा है, तो पण्डित लेखराम वहां पहुंच कर कार्य करने के लिए उद्यत हैं, न मार्ग की कठिनाई का विचार है; न ही इस बात का विचार है कि जहां जाएंगे, वहां भोजन मिलना भी कठिन है; विरोधियों की संख्या सहस्रगुणा है और सहायक सम्भवतः कोई भी न हो; परन्तु फिर भी धर्मवीर अपने यज्ञ पर अटल हैं; अपने मिशन की पूर्ति के लिए उपस्थित है।

परम तपस्वी

उनका जीवन तपस्या का जीवन था। वह कष्ट सहन कर सकते थे तथा करते थे। प्रतिदिन यात्रा में रहना कोई साधारण बात नहीं। उनको इस बात की तनिक भी चिन्ता न थी कि उन्हें धनिकों जैसा भोजन प्राप्त होता है अथवा निर्धनों जैसा। जो कुछ प्राप्त हुआ, उसी को खा पीकर, अपितु कई बार भूखा रहकर भी वह उपदेश देते थे, शास्त्रार्थ करते थे। उनकी वेशभूषा भी सादा थी।

प्राणों का निर्मोही निर्भय विप्र

उनमें अद्भुत निर्भीकता थी। सहस्रों विरोधियों के मध्य खड़े होकर भी वे उनके मत का खण्डन करने से न डरते थे। उनको इस बात की कतई चिन्ता न थी कि मेरा जीवन सुरक्षित है अथवा नहीं। मिर्जाइयों के सामना के लिए वह प्रतिक्षण डटे रहते थे।

सर्वस्व समर्पण करने की चाह

आर्य समाज के लिए उनमें अत्यन्त प्रेम था, इस पर फिदा (समर्पित) थे। न अपने घर की कुछ चिन्ता थी तथा न मित्रों का कुछ विचार था। जिस प्रकार जैसूबाट मिशनरी अपने निश्चय के पक्के थे तथा अपने मिशन को सबसे बढ़कर समझते थे, इसी प्रकार यह धर्मवीर भी आर्यसमाज तथा वैदिक प्रचार से बढ़कर किसी उद्देश्य को स्वीकार नहीं करते थे। यही उनके जीवन की लगन थी। इसके लिए वह सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार थे।

घातक इस बात में तो सफल हुआ कि पंडित जी के जीवन को समाप्त कर दें, परन्तु उसने पंडित जी के जीवन को सहस्रों गुणा अधिक उज्ज्वल तथा पवित्र बना दिया तथा आर्यसमाज की जड़ों को भी दृढ़ कर दिया क्योंकि शहीद का रक्त धर्म के भवन का सीमेंट (गारा चूना) होता है।

आर्यों के पतन के कारण

स्वयंभुव राजा से लेकर पाण्डव पर्यन्त आर्यों का चक्रवर्ती राज्य रहा। तत्पश्चात् आपस के विरोध से लड़कर नष्ट हो गये। क्योंकि इस परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान् लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता। और यह संसार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुत सा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है, तब आलस्य, पुरुषार्थ रहितता, ईर्ष्या-द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है। इससे देश में विद्या सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुण और दुष्ट व्यसन बढ़ जाते हैं। – **महर्षि दयानन्द सरस्वती**

Moringa : Super Food

- Dr. Amandeep Sanger

Moringa flowers are very fragrant and are surrounded by five unequal thinly veined and yellow whitish petals. Fruits are green and look like long drumsticks. They are hanging and hold numerous dark brown and globular seeds. Fruits, leaves and seeds all can be used for eating except root. The tree is rich in antioxidants and several bioactive compounds. The leaves are excellent source of B vitamins, iron, mineral and proteins. Ithas been used traditionally in treatment and prevention of a range of disorders.

Moringa, also known as Shigru, Drumstick and Sehjan is graceful, small and evergreen deciduous tree. The tree grows very fast up to the height of 10-12 meter with 45cm diameter. Bark of moringa is smooth, dark grayish in colour and surrounded by thick cork. This tree is native of India and widely grows in subtropical areas in North India. Now it is grown in tropical and sub tropical regions throughout the world. It is also found in Ethiopia, Sudan, Philippines, America, Tropical Asia and Florida. It can grow on any kind of soil and requires very less water. Moringa flowers are very fragrant and are surrounded by five unequal thinly veined and yellow whitish petals. Fruits are green and look like long drumsticks. They are hanging and hold numerous dark brown and globular seeds. Fruits, leaves and seeds all can be used for eating except root. The tree is rich in antioxidants and several bioactive compounds. The leaves are excellent source of B vitamins, iron, mineral and proteins. It has been used traditionally in treatment and prevention of a range of disorders like diabetes hypertension. hypercholesterol etc. There are three varieties of shigru viz black, white and red.

Ayurvedic Energetics

Taste: Pungent, Bitter

Potency: Hot

Quality: Light, Dry

Post digestive effect: Pungent Effect on humors: Pacifies Vata and Kapha

Therapeutic effect: Anti inflammatory

Part Used - Leaves, Seeds, Fruits, Flowers

Dosage - 1. Powder-1 to 3 gm, 2. Decoction-30 to 50 ml

HEALTH BENEFITS

Nutritional Supplement: Has been used to combat malnutrition among infants and nursing mothers. It may provide a versatile nutritious food throughout the year in various regions.

Blood sugar: Possesses anti diabetic properties thus controls blood sugar and its complications like retinopathy, neuropathy and diabetic foot.

Cholesterol level: Helps to decrease cholesterol level in blood and stimulates excretion of fatty acids Thus prevents myocardial infarction(MI) and brain stroke.

Muscle Building: It contains 9.8 gm of protein in 100gm thus helpful in muscle building.

Immunity: Rich in antioxidant Vitamin C, thus improves immunity and protects our body from various infections.

Sperm count: Fruit is known to increase quality and quantity of sperm giving strength to male reproductive system.

Blood pressure: Moringa contains compounds that help to stop arteries from thickening thereby preventing rise in blood pressure.

Anti inflammatory: Leaves.seeds and seed pods are known for their anti-inflammatory effect. Shigru targets key enzymes that facilitate the release of pro-inflammatory chemicals in the joints, thus helps suppress inflammation and pain. It also improves blood circulation in the joints.

Calcium supplement: As a rich source of calcium, it gives strength to teeth and bones and prevents osteoporosis and various bone disorders.

Skin and hair: Moringa seed oil is beneficial for protecting hair against free radicals and keeping them clean and healthy. It also contains proteins which are helpful in protecting skin from damage.

Liver Health: Moringa works to protect the liver against damage caused by certain medications and can quicken its repair process.

How to use

Dysmenorrhoea: Leaf decoction 50- 60 ml twice daily in dysmenorrhoea."Headache: Application of leaf paste on forehead to relief headache.

Face pack: Leaf paste or juice with lemon juice is used as a face pack to overcome black heads and acne.

Conjunctivitis: Leaf juice is instilled in eyes or paste is applied around eyes.

Moringa has been used in traditional medicine for thousands of years. Studies have shown its high antioxidant and anti-inflammatory properties. It is also considered as a nutritious food source due to presence of essential vitamins and minerals.

Caution

- Pregnant women are advised not to consume as it may lead to miscarriage.

-People with gastritis or sensitive stomach should use it carefully.

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी (पूर्व नाम धनसिंह आर्य) का आकस्मिक निधन

आर्य समाज के संघर्षशील कार्यकर्ता तथा शुद्धि अभियान के योद्धा स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी (पूर्व नाम श्री धनसिंह आर्य) का दिनांक 23 दिसम्बर, 2023 को ग्राम व पोस्ट–सलखिया, जिला–रायगढ़ (छ.ग.) में आकस्मिक निधन हो गया। स्वामी जी सर्वात्मना आर्य समाज के प्रति समर्पित थे। छत्तीसगढ़ के वन क्षेत्र में हजारों हिन्दू परिवार जो धर्म छोड़कर ईसाई मत को अपना लिया था, उन्हें पुनः हिन्दू धर्म में परिवर्तित कराने का कार्य किया एवं सैकड़ों बालक, बालिकाओं को गुरुकुलों में पढ़ने हेतु प्रवेश कराया। वे चिकित्सीय सेवा के द्वारा वन क्षेत्र के निर्धन लोगों की निःशुल्क सेवा करते रहे। उनके मार्गदर्शन में बालकों के लिए सलखिया में तथा बालिकाओं के लिए राजपुर में गुरुकुल की स्थापना भी हुई। उन्होंने अपने पुत्र एवं पुत्री को भी आर्य समाज द्वारा संचालित गुरूकुलों में ही पढ़ाया। ऐसे कर्मठ एवं समाज को समर्पित संन्यासी का निधन निःसंदेह आर्य समाज एवं राष्ट्र

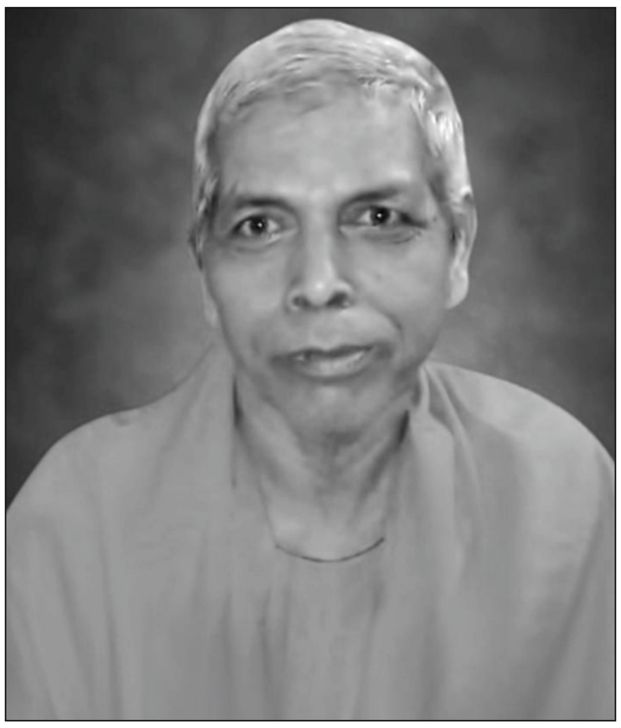

की अपूर्णीय क्षति है। सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने अपनी ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति के लिए तथा उनके समस्त सहयोगियों एवं शुभचिन्तकों को इस दारूण दुःख को सहने करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की।

विदित हो कि स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी (श्री धनसिंह आर्य) की सुयोग्य सुपुत्री गायत्री आर्या जी मातृ मंदिर कन्या गुरुकुल वाराणसी से अपनी पढ़ाई पूरी की तथा वर्तमान में वे इस गुरुकुल को सुचारू रूप से चलाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। ऐसे कर्मठ पिता की सन्तान सुयोग्य विदुषी बहन गायत्री आर्या जी वर्तमान में मातृ मंदिर कन्या गुरुकुल वाराणसी की आचार्या एवं मुख्याधिष्ठात्री हैं। इनके देख–रेख में गरीब परिवार की बच्चियों को शिक्षित एवं संस्कारित करने का कार्य निरन्तर जारी है।

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- ***www.facebook.com/SwamiAryavesh*** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

!!ओ३म्!!

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 200वाँ

1825 - 2025

जन्म जयन्ती वर्ष

स्वामी इन्द्रवेश

आर्य समाज के महान नेता, त्यागी–तपस्वी संन्यासी, युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 87वें जन्मोत्सव के अवसर पर

17वाँ बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

दिनांक : 5 मार्च, 2024 (मंगलवार) से 17 मार्च, 2024 (रविवार) तक

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक (हरि.)

समय : प्रतिदिन प्रातः 8 से 11 बजे तक, सायं 3 से 6 बजे तक

अध्यक्षता
स्वामी आर्यवेश जी
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली–110002

ब्रह्मा
स्वामी वेद प्रकाश सरस्वती जी
नूरपुर, हिमाचल प्रदेश

मुख्य आकर्षण

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव समारोह
महिला दिवस पर विशेष कार्यक्रम
महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव समारोह
स्वामी इन्द्रवेश जयंती समारोह
विचार गोष्ठियों का आयोजन
कार्यकर्ता सम्मान समारोह

संकल्प

इस महायज्ञ में समाज के प्रतिष्ठित प्रतिनिधि, डॉक्टर, वकील, शिक्षाविद् जन प्रतिनिधि, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक नेता एवं हजारों स्त्री–पुरुष, छात्र एवं छात्राएँ आहुति देकर कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी एवं पाखण्ड के विरुद्ध संकल्प लेंगे।

विशेष : महायज्ञ में उच्चकोटि के संन्यासी, विद्वानों एवं भजनोपदेशकों द्वारा कार्यक्रम निरन्तर चलता रहेगा। यजमान बनने के इच्छुक महानुभाव अभी से अपनी सूचना देकर कृतार्थ करें। आप सभी महायज्ञ में आहुति डालकर राष्ट्र के नव–निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं।

आयोजक

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वितीय जन्म शताब्दी आयोजन समिति

सहयोगी : स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन, युवा निर्माण अभियान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्

कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक (हरि.)

सम्पर्क : 9416630916, 9354840454, 9466430772

प्रो० विट्ठलराव आ५, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)

सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।